Research Paper | IMPACT FACTOR VALUE : 6.247 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 12 | ISSUE : 4 | APRIL 2026

डिजिटल युग में महिलाओं की निर्णय-क्षमता पर शिक्षा का प्रभाव : एक अध्ययन

डॉ. नीलम त्रेहन [1]

[1] **पीएच.डी. (समाजशास्त्र), सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़).**

ABSTRACT:

डिजिटल परिवर्तन के वर्तमान दौर में शिक्षा महिलाओं के लिए केवल साक्षरता तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह उनके चिंतन, आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता को भी प्रभावित कर रही है। मोबाइल फोन, इंटरनेट, सोशल मीडिया, ऑनलाइन बैंकिंग तथा ई-शासन जैसी डिजिटल सुविधाओं ने महिलाओं के दैनिक जीवन में नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि शिक्षा डिजिटल युग में महिलाओं की निर्णय-क्षमता को किस प्रकार आकार देती है। अध्ययन से यह तथ्य सामने आया कि उच्च शैक्षिक स्तर वाली महिलाएँ पारिवारिक, आर्थिक, स्वास्थ्य एवं शैक्षिक निर्णयों में अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्र और सजग भूमिका निभाती हैं।

KEYWORDS:

-

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
4th April 2026	7th April 2026
PAPER DOI NO:	**PAPER DOI LINK:**
10.5281/zenodo.19455207	https://zenodo.org/records/19455207

1. भूमिका (Introduction)

आधुनिक समाज में डिजिटल तकनीक ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। संचार, शिक्षा, बैंकिंग, स्वास्थ्य और प्रशासन जैसे क्षेत्रों में डिजिटल माध्यमों की बढ़ती भूमिका ने सामाजिक संरचना में परिवर्तन उत्पन्न किया है। परंपरागत समाज में महिलाओं की निर्णयात्मक भूमिका सीमित रही है, किंतु शिक्षा और डिजिटल साधनों की उपलब्धता ने इस स्थिति को धीरे-धीरे परिवर्तित किया है। शिक्षा महिलाओं को न केवल जानकारी प्रदान करती है, बल्कि उनमें तार्किक सोच, आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास का विकास भी करती है, जो निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में सहायक सिद्ध होता है।

2. डिजिटल युग की अवधारणा

डिजिटल युग वह कालखंड है जिसमें सूचना एवं सेवाओं का आदान-प्रदान मुख्यतः डिजिटल माध्यमों के द्वारा किया जाता है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, कंप्यूटर, सोशल मीडिया, डिजिटल भुगतान प्रणाली और ऑनलाइन सरकारी सेवाएँ इसके प्रमुख घटक हैं। इन माध्यमों के माध्यम से महिलाओं को सूचनाओं तक त्वरित पहुँच प्राप्त हुई है, जिससे उनकी सामाजिक भागीदारी और जागरूकता में वृद्धि हुई है।

3. निर्णय-क्षमता की अवधारणा

निर्णय-क्षमता से तात्पर्य व्यक्ति की उस योग्यता से है जिसके माध्यम से वह उपलब्ध विकल्पों का मूल्यांकन कर उपयुक्त निर्णय लेता है। महिलाओं के संदर्भ में यह क्षमता पारिवारिक मामलों, आर्थिक लेन-देन, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं के चयन तथा सामाजिक सहभागिता से संबंधित निर्णयों में परिलक्षित होती है। शिक्षा इस क्षमता को विकसित करने में **महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।**

4. शिक्षा और महिलाओं की निर्णय-क्षमता का संबंध

शिक्षा महिलाओं को उनके अधिकारों, कर्तव्यों और अवसरों के प्रति जागरूक बनाती है। शिक्षित महिलाएँ डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग कर बैंकिंग कार्य, ऑनलाइन भुगतान, सरकारी योजनाओं की जानकारी, बच्चों की शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं से संबंधित निर्णय अधिक स्वतंत्र रूप से ले पाती हैं। शिक्षा के माध्यम से महिलाओं में आत्मविश्वास और विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास होता है, जो निर्णय-निर्माण को सुदृढ़ बनाता है।

5. अध्ययन के उद्देश्य

1. डिजिटल युग में महिलाओं की निर्णय-क्षमता की प्रकृति का अध्ययन करना।
2. शिक्षा के स्तर और निर्णय-क्षमता के बीच संबंध का विश्लेषण करना।
3. शिक्षित एवं कम शिक्षित महिलाओं की निर्णय-क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. डिजिटल माध्यमों के उपयोग में महिलाओं के समक्ष उपस्थित सामाजिक एवं तकनीकी बाधाओं की पहचान करना।

6. शोध परिकल्पनाएँ

1. शिक्षा का महिलाओं की निर्णय-क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
2. डिजिटल साक्षरता से महिलाओं की स्वतंत्र निर्णय-क्षमता में वृद्धि होती है।
3. उच्च शिक्षित महिलाएँ डिजिटल सेवाओं का अधिक आत्मविश्वास के साथ उपयोग करती हैं।

7. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति को अपनाया गया है। अध्ययन का क्षेत्र दुर्ग जिला के दुर्ग शहर (छत्तीसगढ़ राज्य) निर्धारित किया गया है। अध्ययन हेतु 100 महिलाओं का चयन किया गया, जिनमें विभिन्न शैक्षिक स्तरों की महिलाएँ सम्मिलित थीं। आँकड़ों के संकलन के लिए प्रश्नावली तथा साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया। संकलित आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत एवं तुलनात्मक विधियों के माध्यम से किया गया। संकलित आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत एवं तुलनात्मक विधियों के माध्यम से

किया गया।

11. परिकल्पनाओं के आधार पर सरल डेटा प्रस्तुतीकरण (सरल तालिकाएँ)

तालिका 1 : शिक्षा स्तर के अनुसार महिलाओं की निर्णय-क्षमता

शिक्षा स्तर	महिलाएँ (संख्या)	निर्णय स्वयं लेती हैं	निर्णय नहीं लेती हैं
कम शिक्षा	30	10	20
माध्यमिक शिक्षा	40	25	15
उच्च शिक्षा	30	22	8
कुल	**100**	**57**	**43**

सरल व्याख्या: तालिका से स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं में स्वयं निर्णय लेने की संख्या अधिक है।

तालिका 2 : डिजिटल ज्ञान और निर्णय लेने की क्षमता

डिजिटल ज्ञान	महिलाएँ (संख्या)	स्वयं निर्णय लेती हैं	दूसरों पर निर्भर
कम शिक्षा	30	10	20
माध्यमिक शिक्षा	40	25	15
उच्च शिक्षा	30	22	8
कुल	**100**	**57**	**43**

सरल व्याख्या: जिन महिलाओं का डिजिटल ज्ञान अधिक है, वे निर्णय लेने में दूसरों पर कम निर्भर रहती हैं।

तालिका 3 : शिक्षा स्तर और डिजिटल सेवाओं में आत्मविश्वास

शिक्षा स्तर	महिलाएँ (संख्या)	आत्मविश्वास है	आत्मविश्वास नहीं है
कम शिक्षा	30	11	19
माध्यमिक शिक्षा	40	26	14
उच्च शिक्षा	30	23	7
कुल	**100**	**60**	**40**

सरल व्याख्या: शिक्षा बढ़ने के साथ महिलाओं में डिजिटल सेवाओं के उपयोग का आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

विश्लेषण एवं विवेचन तालिका के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं में निर्णय स्वयं लेने की क्षमता एवं डिजिटल सेवाओं के उपयोग का आत्मविश्वास अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। इसके विपरीत कम शिक्षित महिलाओं में डिजिटल साधनों के प्रति संकोच, पारिवारिक निर्भरता एवं तकनीकी ज्ञान की कमी अधिक देखी गई। सामाजिक परंपराएँ एवं पारिवारिक नियंत्रण भी महिलाओं की निर्णय-क्षमता को प्रभावित करते हैं।

9. निष्कर्ष (Conclusion)

अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि डिजिटल युग में महिलाओं की निर्णय-क्षमता के विकास में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षा और डिजिटल साक्षरता महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाती है तथा उन्हें पारिवारिक और सामाजिक निर्णयों में सक्रिय सहभागिता के लिए प्रेरित करती है। यदि महिलाओं को समान शैक्षिक अवसर और डिजिटल संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ, तो उनकी निर्णय-क्षमता में और अधिक सुदृढ़ता लाई जा सकती है।

10. सुझाव

1. महिलाओं के लिए विशेष डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
2. ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में महिला शिक्षा को प्राथमिकता दी जाए।
3. डिजिटल सेवाओं को सरल और महिलाओं के अनुकूल बनाया जाए।
4. सामाजिक जागरूकता अभियानों के माध्यम से महिलाओं की निर्णयात्मक भूमिका को प्रोत्साहित किया जाए।

REFERENCES

1. अग्रवाल, जे. सी. (2018). शिक्षा का समाजशास्त्र. नई दिल्ली: शिप्रा पब्लिकेशन्स।

2. कुमार, अरुण (2020). डिजिटल भारत: अवधारणा एवं प्रभाव. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।

3. मिश्रा, आर. के. (2019). महिला सशक्तिकरण और शिक्षा. लखनऊ: न्यू रॉयल बुक कंपनी।

4. शर्मा, मीना (2021). डिजिटल युग में महिलाएँ. जयपुर: राज पब्लिशर्स।

5. सिंह, एस. एन. (2017). सामाजिक शोध पद्धतियाँ. नई दिल्ली: के. के. पब्लिकेशन्स।

6. सरकार, भारत (2022). डिजिटल इंडिया कार्यक्रम: एक अवलोकन. नई दिल्ली: सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय।

7. यूनेस्को (2021). शिक्षा और लैंगिक समानता पर रिपोर्ट. पेरिस: यूनेस्को।